B. A. Third Year

First paper

Geographical Thought

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of geography

Harishchandra P. G. College Varanasi

"ए. जे. हरबर्टसन"
"A. J. Herbertson" (1865-1915)

एण्ड्रयू जॉन हरबर्टसन का जन्म दक्षिणी इंग्लैण्ड में 1865 में हुआ था। उनकी उच्च शिक्षा जलवायु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा भूगोल विषयों में जर्मनी तथा फ्रांस में हुई। इसलिए उनपर फ्रान्सीसी विचारधारा का प्रभाव अधिक था। प्रारम्भ में उन्होंने मौसम विज्ञान (Meteorology) तथा महासागरीय विज्ञान (Oceanography) पर कार्य किया। 1891 में आपको ब्रुण्डी विश्वविद्यालय (मानचेस्टर) में वनस्पति विज्ञान का प्रयोगशाला सहायक बना। 1894 में आप आक्सफोर्ड में भूगोल के प्रवक्ता बने। 1899 में भूगोल विभाग के अध्यक्ष बने। आपको रॉयल भौगोलिक परिषद् का सदस्य भी चुना गया। आपकी रुचि भूगोल के अध्ययन एवं विधि तन्त्र के विकास पर थी। सन् 1895 में जर्मनी के फ्रीबर्ग विश्वविद्यालय से "वर्षा वितरण" शीर्षक पर पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। हरबर्टसन ने मैकिण्डर के सानिध्य में रहकर कार्य किया, इसलिए इनका चिन्तन मैकिण्डर के चिन्तन से प्रभावित रहा। सन 1915 में अपनी मृत्युतक आप आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में कार्यरत रहे।

रचनाएं ⇒ हरबर्टसन की रुचि भूगोल के प्रति प्रारम्भिक समय से ही रही। उन्होंने 1904 में रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी के समक्ष अपना शोधपत्र 'प्रमुख प्राकृतिक प्रदेश (The Major Natural Regions) रखा। जो 1905 में Major Natural Regions: An Essay in Systematic Geography) नाम से प्रकाशित हुआ। इनकी प्रमुख रचाएं निम्नवत हैं

⇒1. भूगोल का विषय क्षेत्र एवं शैक्षणिक उपागम (Recent discussions on the scope and Educational Approach in Geography-1904)
2. विश्व के प्रमुख प्राकृतिक प्रदेश (The Major Natural Regions-1905)
3. मानव व उसके कार्य (Man And His Work-1911)
4. भूगोल की पाठ्य पुस्तक (Textbook of Geography)
5. ब्रिटिश साम्राज्य का सर्वेक्षण (Survey of British Empire)
6. ब्रिटिश झीलों का भौगोलिक सर्वेक्षण (Geographical Survey of British Lakes)
7. प्राकृतिक प्रदेश: भूगोल में एक क्रमबद्ध उपागम- (Natural Regions: A Systematic Approach in Geography -1913)

8- प्रादेशिक वातावरण आनुवंशिकता एवं चेतनता — Regional Environment Hereditory and Sense - 1915) (Consciousness - चेतना)

9. The Higher Unit - A Geographical Essay - 1913)

प्रमुख संकल्पनाएं - हटबर्टसन की प्रमुख संकल्पनाएं निम्नलिखित है।

I. प्राकृतिक प्रदेश की संकल्पना - (प्रादेशिक भूगोल) - भूगोल के क्षेत्र में हटबर्टसन का सर्वप्रमुख योगदान 'प्राकृतिक प्रदेश की संकल्पना' प्रस्तुत करना रहा। अर्थात हटबर्टसन की मुख्य विचार धारा विश्व के प्रादेशिक भूगोल के अध्ययन से सम्बन्धित थी। उसकी प्राकृतिक प्रदेश की संकल्पना भूगोल की संकल्पना का ही एक प्रतिबिम्ब है। हटबर्टसन के अनुसार - "भूगोल प्राकृतिक तथा मानव निर्मित वातावरण के क्रमिक स्तरों या पदानुक्रमों का अध्ययन है।"

"Geography is the study of the order of hierarchies of natural and man-made environment."

आपने 1905 में अपना शोध प्रस्तुत किया और राजनीतिक प्रदेशों की बजाय प्राकृतिक प्रदेशों को भौगोलिक अध्ययन की इकाई मानने पर जोर देते हुए बताया कि प्राकृतिक प्रदेश ऐसे क्षेत्र होते हैं जिसमें भू-पटल संरचना, धरातलीय दशा, जलवायु तथा वनस्पति की प्रायः समरूपता (Homogeneity) होती है। ऐसे प्राकृतिक प्रदेश में मानव क्रियाओं में भी समानता होती है। यहाँ जैविक एवं अजैविक तत्वों में परस्पर एक निश्चित साहचर्य (Association) स्थापित हो जाता है। उसने प्राकृतिक प्रदेशों को सापेक्षिक (Relative) माना और कहा कि यह निरपेक्ष (Absolute) नहीं होते है। उसके अनुसार - प्रदेश पृथ्वी की सतह पर पाये जाने वाले भौतिक एवं जैविक तत्वों के संगठन से बनी एक जटिल इकाई होता है। जैसे-जैसे प्रदेश का विस्तार बढ़ता जाता है, जटिलता भी बढ़ती जाती है। आपने प्रादेशिक विभाजन (प्राकृतिक प्रदेशों के निर्धारण) में जलवायु एवं वनस्पति को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना। उन्होंने प्राकृतिक प्रदेशों के निर्धारण में सांस्कृतिक कारकों को महत्व नहीं दिया। अतः उनकी आलोचना हुई। आपने विश्व को छः प्रमुख प्राकृतिक प्रदेशों (Major Natural Regions) में बाँटा।

1. ध्रुवीय प्रदेश - (अ) निम्न स्थल भूमि (टुण्ड्रा)
(ब) उच्च भूमि (ग्रीनलैण्ड)

ब- ग्रीष्म कालीन वर्षा के पूर्वी तटीय (चीन)
स- अन्तः निम्न भूमि (तूरान)
द- पठारी प्रदेश (ईरान)

4. उष्ण प्रदेश -

अ- पश्चिमी अथवा उष्ण मरुस्थल (सहारा)
ब- ग्रीष्म कालीन वर्षावाले (मानसून)
स- अन्तर्देशीय (सूडान)

5. पर्वत-पठारी प्रदेश (उपोष्ण उच्च पर्वतीय प्रदेश-पठारी प्रदेश - तिब्बत)

6. भूमध्य रेखीय प्रदेश (उष्णार्द्र भूमध्यरेखीय निम्न प्रदेश - अमेजन बेसिन)
(13 प्रदेश)

हटबर्टसन ने विश्व के प्राकृतिक प्रदेशों के निर्धारण में मानवीय क्रियाकलापों को कोई स्थान नहीं दिया (यद्यपि उनका विश्वास था कि उनके द्वारा प्रतिपादित प्राकृतिक प्रदेश उन प्रदेशों में निवास करने वाले मानवीय समूहों के लिए उपयोगी आधार प्रदान करते हैं। इसीकारण कुछ विद्वानों ने हटबर्टसन के प्राकृतिक प्रदेशों को "जलवायु-वनस्पति प्रदेश" कहा। साथ ही उसे शुद्ध भूगोल (Pure Geography) का समर्थक माना गया। मानवीय क्रियाकलापों की उपेक्षा के कारण ब्रिटेन में उनकी इस विचारधारा की कटु आलोचना हुई। इसका प्रभाव हटबर्टसन के भौगोलिक चिन्तन पर पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि सन् 1910 के बाद स्वयं हटबर्टसन ने प्राकृतिक प्रदेशों के निर्धारण में मानवीय क्रियाकलापों के महत्व को स्वीकारा तथा सन् 1911 में प्रकाशित अपनी कृति (Man and His Work) में प्रमुख प्राकृतिक प्रदेश के स्थान पर "प्रमुख प्रदेश" शब्द का प्रयोग किया। वास्तव में उसने प्राकृतिक प्रदेशों और मानव के बीच एक सम्बन्ध की संकल्पना की थी और विश्व के विभिन्न भू-भागों का गहन अध्ययन करने के लिए उसको प्रदेशों में बाँटने पर जोर दिया।

II- द्वैतवादी विचारधारा का विरोधी (भौगोलिक एकत्व)

हरबर्टसन ने भूगोल में भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल के द्वैतवाद का विरोध करते हुए बताया कि ये दोनों भूगोल के अन्त: सम्बन्धित एवं अविभाज्य अंग है। हरबर्टसन ने सन् 1916 में भूगोल में इस द्वैतवाद की आलोचना करते हुए लिखा है, " हम किसी बसे हुए क्षेत्र व उसके निवासियों को सम्पूर्णता के अंग के रूप में मानते हुए पृथक नहीं कर सकते। सम्पूर्णता को मानव एवं वातावरण जैसे दो आधे-आधे भागों में बाँटना भूगोल की हत्या करने के समान है। यदि भूगोल जैसे जीवित सम्पूर्ण शरीर को अलग-अलग भागों में अध्ययन करने का प्रयास किया गया तो वह भूगोल के मृत शरीर की चिकित्सा न होकर उसका पोस्टमार्टम होगा। अत: भूगोल का भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल मे विभाजन करना एक हत्यारा कार्य है।"

उनके अनुसार "अपने वातावरण से अलग मानव का कोई अस्तित्व नहीं है।"

इस प्रकार किसी भी प्रदेश का अध्ययन वहाँ के प्राकृतिक परिवेश के साथ जैविक व मानवीय परिवेश के वर्णन के बिना अधूरा है। इन दोनों को अलग करना घातक होगा। यही भूगोल को सम्पूर्णता प्रदान करता है।

I- व्यावहारिक भूगोल (Applied Geography) का चिंतक :- ब्रिटेन के व्यावहारिक भूगोल की संकल्पना के विकास का श्रेय हरबर्टसन को जाता है। हरबर्टसन ने सन् 1890 में सर्वप्रथम " व्यावहारिक भूगोल " शब्द का प्रयोग किया। हरबर्टसन के अनुसार, " भौगोलिक अध्ययन इस प्रकार से किये जाँय कि इन अध्ययनों का उपयोग मानव की व्यावहारिक समस्याओं के हल में किया जा सके।" भूगोल के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में मानव के रहन-सहन व जीवन-दशाओं का अध्ययन कर मानवीय समस्याओं से परिचित होना व उनको हल करने की दिशा में सुझाव देना है। यही व्यावहारिक भूगोल का सार है। यह भूगोल मानव जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने व उसके जीवन में गुणवत्ता में वृद्धि करने से सम्बन्धित होता है। इससे स्पष्ट होता है कि " भूगोल केवल वर्तमान का अध्ययन ही नहीं करता, बल्कि भावी दृश्यों का भी अध्ययन करता है।" Geography is not only the study of the present but it is also the study of future landscape."

Swain